

घमंड का सिर नीचा-पंचतंत्र

एक गांव में उज्वलक नाम का बढई रहता था । वह बहुत गरीब था । गरीबी से तंग आकर वह गांव छोडकर दूसरे गांव के लिये चल पडा । रास्ते में घना जंगल पडता था । वहां उसने देखा कि एक ऊँटनी प्रसवपीडा से तडफडा रही है । ऊँटनी ने जब बच्चा दिया तो वह ऊँट के बच्चे और ऊँटनी को लेकर अपने घर आ गया । वहां घर के बाहर ऊँटनी को खूँटी से बांधकर वह उसके खाने के लिये पत्तों-भरी शाखायें काटने वन में गया । ऊँटनी ने हरी-हरी कोमल कौंपलें खाईं । बहुत दिन इसी तरह हरे-हरे पत्ते खाकर ऊँटनी स्वस्थ और पुष्ट हो गई । ऊँट का बच्चा भी बढकर जवान हो गया । बढई ने उसके गले में एक घंटा बांध दिया, जिससे वह कहीं खोया न जाय ।

दूर से ही उसकी आवाज सुनकर बढई उसे घर लिवा लाता था । ऊँटनी के दूध से बढई के बाल-बच्चे भी पलते थे । ऊँट भार ढोने के भी काम आने लगा ।

उस ऊँट-ऊँटनी से ही उसका व्यापार चलता था । यह देख उसने एक धनिक से कुछ रुपया उधार लिया और गुर्जर देश में जाकर वहां से एक और ऊँटनी ले आया । कुछ दिनों में उसके पास अनेक ऊँट-ऊँटनियां हो गईं । उनके लिये रखवाला भी रख लिया गया । बढई का व्यापार चमक उठा । घर में दुधकी नदियाँ बहने लगीं ।

शेष सब तो ठीक था----किन्तु जिस ऊँट के गले में घंटा बंधा था, वह बहुत गर्वित हो गया था । वह अपने को दूसरों से विशेष समझता था । सब ऊँट वन में पत्ते खाने को जाते तो वह सबको छोडकर अकेला ही जंगल में घूमा करता था ।

उसके घंटे की आवाज़ से शेर को यह पता लग जाता था कि ऊँट किधर है । सबने उसे मना किया कि वह गले से घंटा उतार दे, लेकिन वह नहीं माना ।

एक दिन जब सब ऊँट वन में पत्ते खाकर तालाब से पानी पीने के बाद गांव की ओर वापिस आ रहे थे, तब वह सब को छोडकर जंगल की सैर करने अकेला चल दिया । शेर ने भी घंटे

की आवाज सुनकर उसका पीछा किया । और जब वह पास आया तो उस पर झपट कर उसे मार दिया ।

सीख : घमंड का सिर नीचा ।

अनुवाद - कुलदीप धर

अभंग का भिर नीला-पंठउंउ

एक गांव में उल्लूक नाम का गढ़ों रहता था। वरु गढ़उ गरीम
था। गरीमी में उंग मुकर वरु गांव केरुकर दुभरें गांव के लिबे
एल परा। रामु में अना एंगल परता था। वरुं उभने टोपा कि
एक उंएनी पूभवपीरा में उरुदरु रकी कै। उंएनी ने एग गसु
दिया उे वरु उंए के गसुे एर उंएनी के लेकर मपने अर मु गया।
वरुं अर के गरु उंएनी के प्रेपी में गंणकर वरु उभके पाने
के लिबे पड़े-रुगी मापावे काएने वन में गया। उंएनी ने रुगी-
रुगी केभल केंपले पारें। गढ़उ दिन उभी उरु रुरे-रुरे पड़े
पाकर उंएनी भूमू एर पुष्ट के गरें। उंए का गसुा ही गढकर
एवन के गया। गढ़ों ने उभके गले में एक अंए गंण दिया,
एिममें वरु ककीं पिया न एव।

दुर में की उभकी मुवाए भुनकर गढ़ों उमें अर लिवा लाता था।
उंएनी के दुर में गढ़ों के गल-गसुे ही पलउे थे। उंए एर देने
के ही काभ मुने लगा।

उभ उंए-उंएनी में की उभका वृपर एलता था। वरु टोप उभने
एक एनिक में कुळ रूपया उणर लिवा एर गुल्हर टिम में
एकर वरुं में एक एर उंएनी ले मुया। कुळ दिनें में उभके
पाभ मुनेक उंए-उंएनियं के गरें। उनके लिबे रापकला ही राप
लिवा गया। गढ़ों का वृपार एभक उण। अर में दुरकी
नदिये गुरुने लगीं।

मेध भग उे ठीक था----किन्तु एिम उंए के गले में अंए गंण था,
वरु गढ़उ गविउ के गया था। वरु मपने के दुभरें में विमेध

मभाउता था। मग उँए वन में पड़ुँ पावे के एउँ उँ वरु मग के
केरुकर मकेला की एंगल में प्रभा करता था।

उमके अँए की मुवाए मे मेर के वरु पता लग एता था कि उँए
किणर है। मगने उमे भना किया कि वरु गले मे अँए उतरा है,
लेकिन वरु नहीं भाना।

एक दिन एग मग उँए वन में पड़ुँ पाकर उलाह मे पानी पीने
के गार गांव की उर वपिम मु रूँ से, उम वरु मग के केरुकर
एंगल की मेर करने मकेला एल दिया। मेर ने ही अँए की
मुवाए मुनकर उमका पीका किया। उर एग वरु पाम मुवा उँ
उम पर एपए कर उमे भान दिया।
भीष : अभंरु का भिर नीगा।

मनुवाए - कुलमीप एर